कोर्स : शृंखला

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

लेखन
राकेश गुप्ता
बूढ़ा, मन्दसौर

C.M. RISE

"प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा"

बुनियादी साक्षरता

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था के मूलभूत सिद्धान्त
26.3.2021
2. सीखने के सिद्धान्त की संक्षिप्त जानकारी
1 अप्रेल.2021
3. प्रारम्भिक बाल्यावस्था मे खेल और मॉर्निंग सर्कल की महत्ता
16.4.2021
4. साक्षरता के सिद्धान्त
23.4.2021
5. भाषा विकास और आरम्भिक साक्षरता
5.5.2021
6. मौखिक भाषा विकास I
13.5.2021
7. संज्ञानात्मक विकास और संख्या पूर्व कौशल
24.5.2021
8. मौखिक भाषा विकास II
2.6.2021
9. मूल्यांकन और पालकों के साथ साझेदारी
11.6.2021
10. पढ़ने के कौशल का विकास
18.6.2021
11. पढ़कर समझना व संबंधित गतिविधियाँ
2.7.2021

कोर्स करने के पूर्व प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा को लेकर मेरे विचार थे?

छोटे बच्चों को सीखाना समझाना बहुत माथापच्ची का काम है साथ ही एक माँ बनकर उनके सारे कार्य करना बहुत कठिन है।

कोर्स करने के पश्चात विचार ऐसे?

छोटों को सीखाना बहुत आसान एवं सरल है साथ ही परिवेश को जोड़ते हुऐ। 3-6 की उम्र अधिक से अधिक ग्रहण करने की क्षमता होती है ऐसी स्थिति में सहायक सामग्री के साथ सभी क्षेत्रों का विकास सहजता से कराया जा सकता है जिससे उसकी पढ़ने-लिखने की ललक बनी रहे।

कोर्स में सबसे प्रभावशाली अंश मुझे यह लगा?

छोटे बच्चों को सीखाने के लिए निर्धारित दैनिक-दिनचर्या, समय सारणी। क्योंकि इसके अभाव में [redacted]-

1. बच्चों को यह नहीं पता होगा कि किस समय कौन सा विषय पढ़ना है।
2. कक्षा में एक समय में बच्चे अलग-अलग विषय पर कार्य कर रहे होगें।
3. कुछ विषयों को अन्य विषयों से कम समय मिलेगा
4. बच्चों को नियमबद्ध और योजनाबद्ध तरीकों से कार्य करना नहीं सीखापाएगें।

कोर्स में बताई गई बातों का मैं अपनी कक्षा में उपयोग कैसे करूँगा?

शाला के वातावरण को आकर्षक बनाऊँगा साथ ही निर्धारित दैनिक दिनचर्या सारणी बनाकर उसके अनुसार बच्चों के समग्र विकास के लिए सहायक सामग्री का उपयोग करते हुए गतिविधियाँ और खेल का चयन करूंगा और अधिक से अधिक संवाद के माध्यम से सभी क्षेत्रों का विकास करूंगा जिससे वे प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार होसके।

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था के मूलभूत सिद्धान्त
2. खेल और मार्निंग सर्कल की महत्ता
3. भाषा विकास और आरम्भिक साक्षरता
4. संज्ञानात्मक विकास और संख्या पूर्व कौशल
5. मूल्यांकन और पालकों की साझेदारी

बाल्यावस्था (उसे 6 वर्ष)

बच्चों के विकास में संवेदनशील समय होता है इसमें हमारी जिम्मेदारी है कि हम बच्चों को अच्छी शुरूआत देना जो उनकी सफलता को सुनिश्चित करने और क्षमताओं का बेहतर प्रयोग के लिए तैयार करना।

इनका विकास करने के लिए भयमुक्त एवं आनन्दमयी वातावरण प्रदान करना अत्यन्त आवश्यक है।

मूल भूत सिद्धान्त -

1. ई.सी.ई शिक्षक की भूमिका
2. स्कूल रेडिनेस स्कूल शिक्षा के लिए बच्चों की तैयारी
3. विकास के क्षेत्र और संबंधित गतिविधियां
4. दैनिक दिनचर्या का पालन

जिस प्रकार एक मजबूत घर बनाने में नींव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है उसी प्रकार बच्चे के समग्र विकास में प्रारम्भिक बाल्यावस्था की भूमिका में शिक्षा अहम है।

कक्षा का वातावरण और इसके अनुभव बच्चों के व्यक्तित्व और सीखने की क्षमताओं को स्वरूप देते हैं।

बाल्यावस्था में दिमाग के विकास के लिए ग्रहणशील अवस्थाएँ

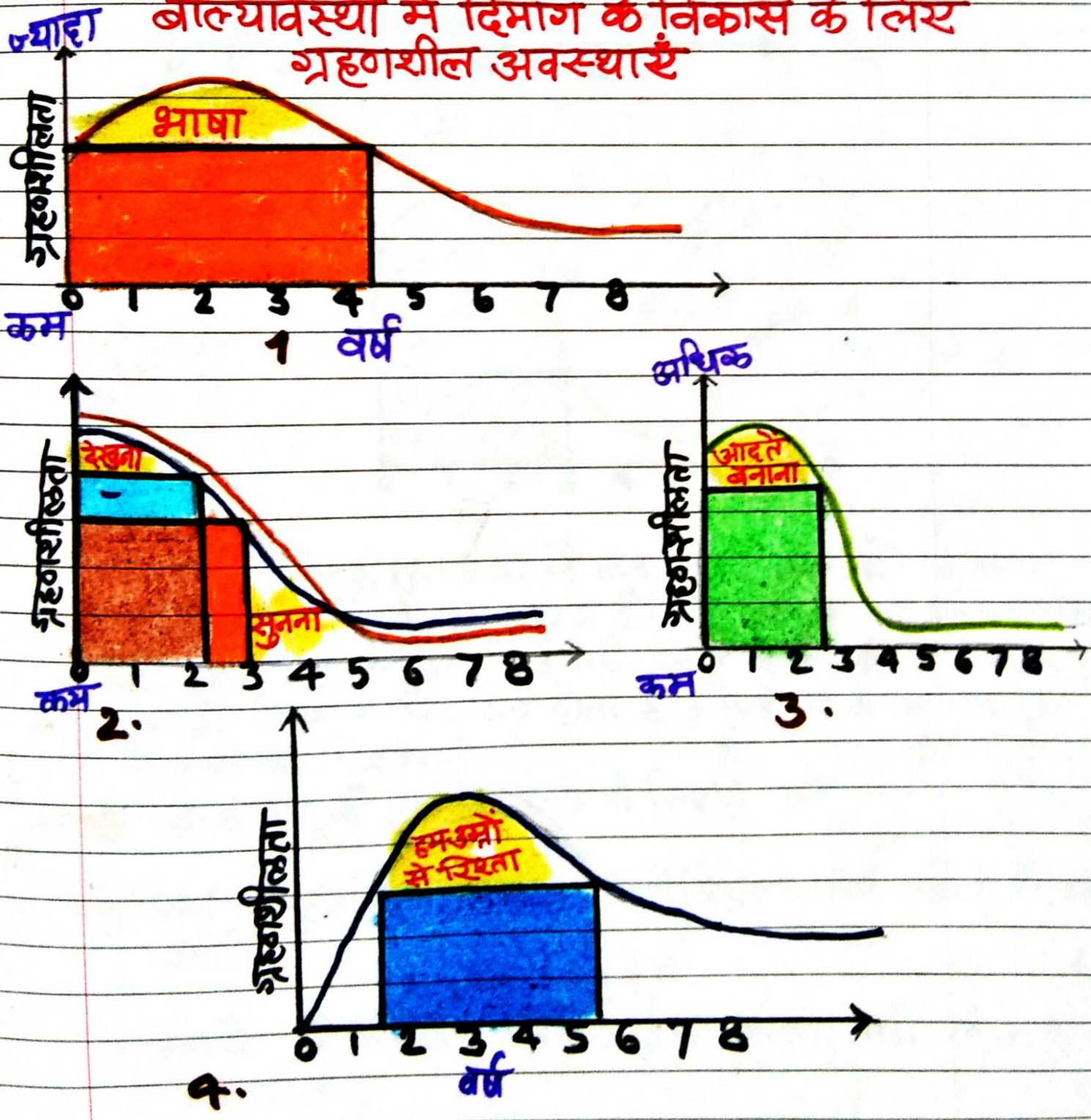

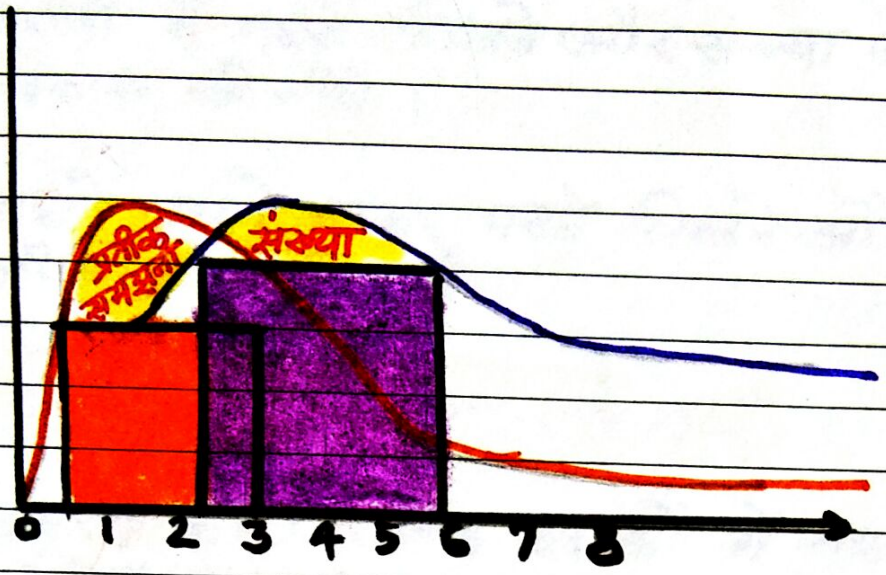

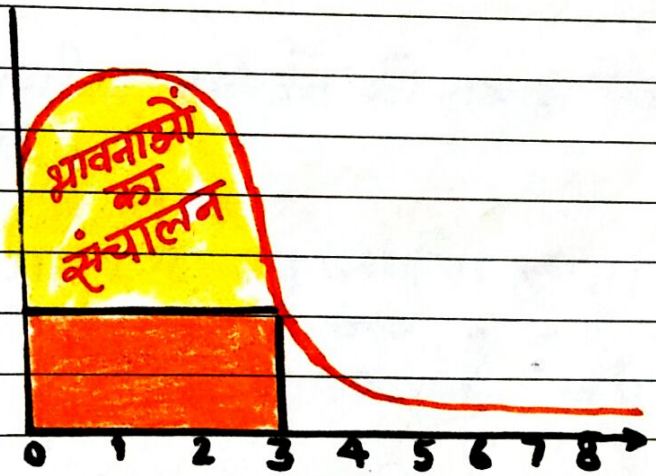

प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों के सीखने के स्तर में वृद्धि के लिए आवश्यक है कि गुणवत्तापूर्ण पूर्वप्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाए। उनकी सामाजिक और व्यक्तिगत आदतें तेजी से विकसित होती हैं और बच्चें के सर्वांगिण विकास की नींव पड़ती है।

- 3-6 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए।
- एक संतुलित खेल और गतिविधि आधारित और इंटरैक्टिव कार्यक्रम।
- बच्चों के विकास के लिए एक आनन्ददायी एवं प्रेरक वातावरण।

- बच्चों में पढ़ने-लिखने और संख्या पर काम के विकास की नींव।
- बच्चे आगे जाकर पढ़ने लिखने और अंकगणित सीखने की तैयारी।

"शिक्षा के व्यापक लक्ष्य-"

- बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए मजबूत बनाना।
- बच्चों में आजीवन सीखने की ललक पैदा करना नींव मजबूत बनाना

पूर्व प्रा॰ शि॰ के उद्देश्य

- ऐसे वातावरण का निर्माण करना जहाँ बच्चे को घर जैसा वातावरण एवं अपनत्व मिले साथ ही अपने आप को सुरक्षित महसूस करे। स्वयं सकारात्मक सोच रखे।
- बेहतर स्वास्थ्य, स्वच्छता पोषण, खुशनुमा माहौल में अच्छी आदतों का विकास करना।
- वातावरण का निर्माण ऐसा हो जिसमें, लगन से सीखने, रचनात्मकता, परिवेश से सहयोग और जुड़ाव स्थापित कर सकने योग्य बनने में मदद करना।
- पूर्व प्राथमिक कक्षा से प्रा॰ वि॰ में सहज रूप से जुड़ने और जाने के लिए तैयार करना साथ-साथ व्यक्तित्व के समग्र विकास के अवसरों को बढ़ावा देना।

PAGE NO.:

बाल्यावस्था शिक्षा को विकास की नींव माना जाता है क्यों?

प्रारम्भिक वर्षों के दौरान बच्चों को जितने अनुभव एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाएगी उनका विकास उतना ही बेहतर और मजबूत होगा। इसलिए नींव माना जाता है।

पूर्व-प्राथमिक में शिक्षक की भूमिका

- बच्चों का सीखना और विकास सुनिश्चित करना
- संबंध और पारस्परिक व्यवहार सुनिश्चित करना
- लैंगिक समानता सुनिश्चित करना
- समावेशी कक्षा बनाना
- कक्षा में भौतिक वातावरण का निर्माण.

स्कूल रेडिनेस

- अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली
- प्रभावशाली संप्रेषक बनना
- उत्साहित

PAGE NO.:

विकास के क्षेत्र

छोटे बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं वे अलग-अलग प्रतिक्रियाओं को करने में सक्षमता प्राप्त करते हैं।

बाल्यावस्था में विकास के अलग-2 पहलू हैं बच्चे समग्र वृद्धि के लिये समावेशी तरीके विकसित किए जाना चाहिए। बच्चों के मुख्यत: 5 क्षेत्रों पर ध्यान दिया जाता है और उनका आकलन भी किया जाता है।

यह परस्पर एकदूसरे से संबंधित होते हैं। यदि कोई गतिविधि एक आयाम को उत्प्रेरित करती है तो दूसरे आयाम को प्रभावित करती है।

भाषा विकास और आरम्भिक साक्षरता

प्रभावी संवाद के कौशलों और आरम्भिक साक्षरता के विकास से संबंधित है।

उदा. बच्चे ने कहा पानी पीना ?

मेम मुझे पानी पीना है।

PAGE NO.:

संज्ञानात्मक विकास और संख्या पूर्व कौशल

सोचना और समस्या को सुलझाना

वस्तुओं के बारे में वैचारिक ज्ञान, सवाल करना अनुमान लगाना और गणितीय सोच की नींव

उदा॰ - पैटर्न और रंगों की पहचान-

सुक्ष्म और स्थूल मांसपेशियों के कौशल

शारीरिक और मांसपेशीय विकास में सुक्ष्म और स्थूल मांसपेशीय कौशलों का उपयोग और समन्वय शामिल है।

उदा॰ बिल्डिंग ब्लाक्स से खेलना तथा पेपर काटना फाड़ना, चिपकाना

अच्छी आदतों, बुनियादी मानवीय मूल्यों और दृष्टिकोणों का विकास और दूसरे के साथ मिलजुल कर रहना।

क्या विकास के क्षेत्र से संबंधित गतिविधि केवल उसी क्षेत्र को प्रभावित करती है?

नहीं कोई भी गतिविधी केवल एक नहीं कई क्षेत्रों को प्रभावित करती है। प्रत्येक गतिविधि में शारीरिक, मानसिक, कल्पनाशीलता, और स्नेह सौहार्द आदि कई क्षेत्रों का विकास एक साथ होता है।

रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्य की सराहना

संगीत एक ऐसी विधा है जिसमें स्वतंत्र रूप से और रचनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने की क्षमता।

पर्यावरण के सौंदर्य की सराहना का भाव जगाने और उनमें आस-पास के वातावरण के प्रति संवेदनशीलता का विकास करने में मददगार होता है।

दैनिक दिनचर्या

बच्चों के सर्वांगिण विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उनके अनुभवों को संचरित करने में मदद करता है।

शुरुआती अवस्था में एक नियमित और योजनाबद्ध वातावरण में सीखे तो उनके लिए प्राथमिक कक्षाओं में अपने आप को समाहित करना सहज हो जाता है।

अभी म.भो. का समय है भोजन करने के बाद 20 मिनट खेलने का समय रहेगा।

राकेश सर आज गणित में L.C.M. से पैटर्न बनाना सिखाएंगे।

और हाँ आज खेल के पीरियड में मेरी लूडो (शब्द बनाने) की प्रतियोगिता है।

- सत्र कम अवधि के हो - 30 मिनट से ज्यादा नहीं
- विकास के हर क्षेत्र के लिए क्रमशः निर्धारित सत्र
- बच्चों के लिए समय-समय पर शौचालय जाने
- पानी-पीने और विश्राम के समय निर्धारित करना

खेल गतिविधियों की योजना बनाते समय छोटे समूह, बड़े समूह की गतिविधियों को उम्र के अनुसार और विकास के स्तर को ध्यान में रखते हुए बनाना।

दैनिक दिनचर्या की योजना बनाना आवश्यक है, अचानक आनेवाली जरूरतों को समायोजित करने के लिए लचीलापन भी महत्वपूर्ण है।

- गतिविधियों में सक्रिय और शांत गतिविधियों के बीच संतुलन बनाना
- सीखने के माहौल को सक्रिय रखकर सामग्रीयों की छँटनी करने के अवसर देना।
- बच्चों की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए।
- इनडोर और आउटडोर, स्वतंत्र निर्देशित, सभी प्रकार की गतिविधियों को शामिल करना।
- बच्चों द्वारा खुद की जाने वाली, गतिविधियों में अवसरों के बीच संतुलन बनाना।
- एकल छोटे समूह में होने वाली और संम्पूर्ण समूहवाली

चेक लिस्ट दैनिक दिनचर्या बनाने के लिए

1. प्रत्येक सत्र - २० से ३० मिनट का हो।
२. विकास के हर क्षेत्र के लिए एक सत्र हो।
३. सहायक सामग्री भरपूर हो।
4.
5.

"मैंने सुना और भूलगया, मैंने देखा कुछ याद रहा, मैंने करके देखा मैं सीखगया।"

पोस्टवर्क कार्य को समझना

कोर्स सत्र का संबंधित अंश

सुझावात्मक गतिविधि / टेम्पलेट

अपने कार्य को साझा कैसे करें?

गतिविधि -

विकास क्षेत्र- भाषा विकास और आरम्भिक साक्षरता

गतिविधि का नाम - आना मेरे गाँव

गतिविधि - बच्चों को समूह में बैठा कर उनसे अलग-अलग चित्रों के बारे में पुछेंगें।

सामग्री - पाठ में आए सभी पात्रों एवं उनसे संम्बधित चित्र कार्ड, 5बंद है तो प्रत्येक बंद की 4 लाईन लिखा कार्ड, बच्चे, आदि।

प्रक्रिया - बच्चों को गोले में बिठाएगें। बारी-2 से उनमें से चित्र कार्ड एवं लिखेहुए कार्ड को पहचान कर बताने को कहेगें। वैसी आवाज भी निकलवाऐगें।

अन्य विकास के क्षेत्र - भाईचारा, संवेदनशीलता, प्रकृति से प्रेम, पेड़ों का महत्व, पशुपक्षियों से प्रेम, खेलों का महत्व, सामाजिक, संज्ञानात्मक विकास।

सारांश

PAGE NO.:

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा - सीखने की नींव

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के लक्ष्य

- बच्चों का समग्र विकास
- बच्चों को स्कूली शिक्षा के लिए तैयार करना

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के 4 सिद्धांत

ई सी ई शिक्षक की भूमिका	स्कूल रेडिनेस स्कूली शिक्षा के लिए बच्चों की तैयारी	विकास के क्षेत्र और संबंधित गतिविधियाँ	दैनिक दिनचर्या का पालन
1. बच्चों का सीखना और विकास	1. बच्चों की तैयारी	1. भाषा विकास और आरम्भिक साक्षरता	1. हर विकास के क्षेत्र को शामिल करना
2. संम्बंध और पारस्परिक व्यवहार	2. समुदाय की तैयारी	2. संज्ञानात्मक विकास और संख्या पूर्व कौशल	2. अधिकतम सप्त अवधि 30 मिनट
3. भौतिक वातावरण	3. विद्यालय की तैयारी	3. सुक्ष्म और स्थूल मांसपेशियों के कौशल	3. बच्चों की जरूरतों के लिए लचीला
4. लैंगिक समानता		4. सामाजिक भावनात्मक विकास	4. छोटे और बड़े समूह की गतिविधि
5. समावेशी कक्षा		5. रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्य की सराहना	

राकेश गुप्ता
बूढ़ा मन्दसौर.